भी बच्चा अनाथ न रहे.

नियंत्रण से छूट गया.

नवभारत 18-11-2021

योगदान कोरोना काल में भी सहकारी समितियों ने काफी बेहतरीन कार्य किया

भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारस्तंभ सहकारिता

■ **पुणे, नवभारत न्यूज नेटवर्क.** भारत में 8 लाख से अधिक सहकारी समितियों तथा अमूल, इफको, कृभको जैसी संस्थाओं की सफलता की कहानियों के साथ सहकारिता क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के आधारस्तंभ के रूप में उभरा है. कोविड की महामारी की चोट में सहकारिता क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा. लेकिन इस स्थिति में भी सहकारी समितियों ने काफी बेहतरीन कार्य किया. उन्होंने अपने सिद्धांतों और मूल्यों के आधार पर संकट में फंसे लोगों की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ा. साथ ही यह भी सुनिश्चित किया कि उनकी सेवाएं प्रभावित न हों. इस दृष्टि से हमारे देश में प्रतिवर्ष 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2021 तक 'राष्ट्रीय सहकारिता सप्ताह' मनाया जाता है. उक्त विचार पुणे के वैमनिकॉम की डाइरेक्टर डॉ. हेमा यादव ने प्रकट किए.हेमा यादव ने बताया कि दरअसल, यह दुनिया का सबसे बड़ा सहकारिता आंदोलन बन गया है. इसमें करीब छह लाख सहकारी समितियां जुड़ी हुई हैं.

14 से 20 नवम्बर तक 'राष्ट्रीय सहकारिता सप्ताह'

■ ऐसे में देश के इतने बड़े आर्थिक नेटवर्क के योगदान के लिए उत्सव मनाना एक आवश्यक जिम्मेदारी बन जाती है. इस मौके को पुणे के वैकुंठ मेहता सहकारिता मैनेजमेंट प्रशिक्षण संस्थान (वैमनिकॉम) में 68वां अखिल भारतीय सहकारिता सप्ताह-2021 विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया जा रहा है.

■ 68वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह-2021 की थीम 'सहकारिता के माध्यम से समृद्धि' की इन कठिन समय में बहुत प्रासंगिकता है और सहकारी समितियों को अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों को फिर से परिभाषित कर अर्थव्यवस्था के अपने संबंधित क्षेत्रों को मजबूत करने के अपने प्रयासों को और मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है.

सहकार से समृद्धि के लक्ष्य को साकार करना मूल उद्देश्य

हेमा यादव के अनुसार सहकार से समृद्धि के लक्ष्य को साकार करने के लिए समारोह का मूल उद्देश्य सहकारी क्षेत्र की उपलब्धियों को बताना और सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिए भविष्य की रणनीति तैयार करना है. अलग सहकारिता मंत्रालय के गठन से इस वर्ष के समारोहों का महत्व और बढ़ गया है. इस वर्ष के सहकारी उत्सव से संबंधित क्षेत्र, स्वास्थ्य सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाना, सहकारी विपणन, सहकारिता के लिए व्यवसाय, नवाचार को बढ़ावा देना, रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास, युवा, महिलाओं और कमजोर वर्गों के लिए सहकारी समितियों और वित्तीय समावेशन हैं.

सहकारी समितियों की शुरूआत और संचालन को गति देने का उपयुक्त समय

हेमा यादव का कहना है कि सहकारी समितियों की शुरुआत और संचालन को बढ़ावा देने के लिए यह सबसे अच्छा समय है. सहकारिता अर्थव्यवस्था में अच्छा योगदान देती हैं, क्योंकि लोगों को धन उधार लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. जिसका उपयोग वे उत्पादक गतिविधियों के लिए कर सकते हैं. बदले में यह उनके जीवन स्तर में सुधार करता है. सहकारी सप्ताह लोगों को सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने का आदर्श समय है. यदि अधिक से अधिक युवा सहकारिता में सदस्यों और कर्मचारियों के रूप में भाग लेते हैं और सक्रिय हो जाते हैं, तो सहकारी आंदोलन नेतृत्व का एक उपयुक्त उत्तराधिकार विकसित करेगा और लंबे समय तक खुद को बनाए रखने में सक्षम होगा.

सीएसआर फंड का इस्तेमाल देश के सहकारी क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है. सामरिक विचारक, राजनीतिक विचारक, राजनयिक, नेता और कॉरपोरेट देश में राष्ट्रीय सहकारी समितियों के लिए भारत के लिए प्रभावी रणनीति और भविष्य की दृष्टि तैयार करने के लिए एक मंच पर आते हैं. समारोह का उद्देश्य लोगों को इस तरह के आंदोलन के लक्ष्य के बारे में सूचित करना और साथ ही इसके लिए समर्थन इकट्ठा करना है. भारतीय समाज, सामान्य तौर पर, विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर इस आयोजन में भाग लेता है.इसके अनुसार वैम्निकॉम पुणे ने सहकारी समितियों के काम को लोकप्रिय बनाने और युवाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के दृढ़ संकल्प के साथ राष्ट्रीय से लेकर जिला स्तर तक कई जागरूकता अभियान और वेबिनार आयोजित किए. इस सप्ताह के दौरान कई युवा-विशिष्ट कार्यक्रम जैसे साइकिल रैली, पेंटिंग प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जा रहा है. संस्थान सहकारी समितियों में सामाजिक नवाचार और सहकारी समितियों के नेतृत्व में सतत प्रबंधन और तकनीकी विकास पर पुणे शहर के स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान भी चला रहा है. शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना सहकारी समितियों के डीएनए में हैं और वैम्निकॉम का दृढ़ विश्वास है कि युवा सहकारी संगठन के विकास के लिए रचनात्मक कौशल प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि वे युवा और गतिशील हैं, नए विचारों से ओतप्रोत हो रहे हैं.